Shakti's Classes for Ayurveda
Chiseling the Brilliants

SINCE 2011 IN VARANASI

SHAKTI'S CLASSES for AYURVEDA

A Complete Centre for MD/MS(AIAPGET.), MO (UPSC & PSC), Other Ayurvedic Entrance Examination and Foundation Courses for Proff. I, II & III

Stri-Rog & Prasuti-Tantra

By
Dr. Shakti Raj Rai
9452376134

स्त्रीरोग

Shakti Raj Rai

योनिव्यापद

सभी आचार्यों के अनुसार - 20

चरकानुसार 20 प्रकार के योनिव्यापद में -

दोष के प्रकोप से - 4 (वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज)

दोष- दूष्य संसर्ग एवं प्रकृति निर्देश भेद से - 16

चरकानुसार

वातज -11	वातिक, अचरणा, अतिचरणा, प्राक्चरणा, सूचीमुखी, अंतर्मुखी, पुत्रघ्नी, शुष्का, षण्डी, उदावर्ता, महायोनि
पित्तज -3	पित्तला, रक्तयोनि, अरजस्का
कफज -1	श्लेष्मिकी
सन्निपातज -1	सन्निपातिक
वातपित्तज -2	परिप्लुता व वामिनी
वातकफज-2	उपप्लुता व कर्णिनी

सुश्रुतानुसार

वातज	**पित्तज**	**कफज**	**सन्निपातज (असाध्य)**
वातला	पित्तला	श्लेष्मला	सन्निपातज
उदावर्ता	वामिनी	कर्णिनी	सूचीवक्त्रा
बन्ध्या	पुत्रघ्नी	अचरणा	षण्डी
विप्लुता	लोहितक्षया	अतिचरणा	फलिनी
परिप्लुता	प्रस्रंसिनी	अत्यानन्दा	महती

- महर्षि वाग्भट्ट ने चरक का अनुसरण करते हुए केवल शब्दभेद से 'अचरणा' के स्थान पर विप्लुता का वर्णन किया जो कृमिज होता है। इसके अतिरिक्त अरजस्का के स्थान पर लोहितक्षया बताया है।
- शारंगधर ने आचार्य वाग्भट्ट के सदृश्य वर्णन किया है लेकिन उदावृत्ता के स्थान पर खण्डिता तथा षण्डा के स्थान पर नन्दा का वर्णन किया।
- योगरत्नाकर ने निदान चरकानुसार तथा विभाजन व लक्षण सुश्रुतानुसार बताया है।
- भाव मिश्र ने आचार्य सुश्रुत का अनुसरण किया केवल अचरणा के स्थान पर आनंदचरणा एवं फलिनी के स्थान पर अण्डिनी कहा है।
- स्रंसिनी व बन्ध्या का वर्णन सुश्रुत ने ही किया।
- विप्लुता का वर्णन सुश्रुत तथा वाग्भट्ट दोनों ने किया है।

चरकानुसार विस्तृत वर्णन

योनिव्यापद के 4 निदान - मिथ्याचारेण, प्रदुष्टेनार्तव, बीजदोषात् व दैवात्

1. **वातज योनिव्यापद -**
    - स्तम्भ, पिपीलिका सृप्तिमिव कर्कशता सुप्तिमायास
    - सशब्दरुक्फेन तनु रूक्षार्तवा
    - भ्रंशं वंक्षण पार्श्वदौ व्यथागुल्मं क्रमेण च। - वा.
2. **पित्तज योनिव्यापद -**
    - नीलपीतासितार्तवा।
    - दाह पाक ज्वरोष्णार्ता, भृशोष्णकुणपस्रावा योनि।
    - पूतिगंध ज्वरान्विता - वा.
3. **कफज योनिव्यापद -**
    - पाण्डु वर्णा व पाण्डु पिच्छिलार्तव वाहिनीम्।
      पिच्छिलां शीतां कण्डुग्रस्ताल्पवेदना।
4. **त्रिदोषज योनिव्यापद -**
    - पथ्य व अपथ्य सभी रसों का साथ सेवन करने वाली स्त्री को होता है।
    - 'दाह शूलार्ता श्वेतपिच्छिलवाहिनी'

5. असृजा (रक्तज) -

- अति प्रवर्तते योन्यां लब्धे गर्भेऽपि सासृजा।
- वाग्भट्ट ने इसे रक्तयोनि तथा चक्रपाणि ने इसे अप्रजा नाम दिया।

6. अरजस्का -

- योनि गर्भाशयस्थं चेत् पित्तं संदूषयेद्रसृक्। तथा कार्श्य वैवर्ण्य जननी भृशं।
- वातपित्ताभ्याम क्षीयते रजः....। - लोहितक्षरा – वा.

7. अचरणा -

- योन्यामधावनात् कण्डु जाताः कुर्वन्ति जन्तवः।
- अतिनरकांक्षिणी
- संजात जंतुः कण्डुला कण्ड्वा चातिरतिप्रिया। - विप्लुता - वा.

8. अतिचरणा -

- पवनोऽतिव्यवायेन शोफ सुप्तिरुजः स्त्रियाः।
- शोफ संयुक्तातिव्यवायतः - वा.

9. प्राक्चरणा -

- मैथुनादतिबालायाः पृष्टकटिउरुवंक्षणम्।
- रुजन दूषयते योनि...... - वा.

10. उपप्लुता -

- गर्भिण्याः श्लेष्मलाभ्यासाच्छर्दिनिःश्वासनिग्रहात्।
- कफवातामय...। पाण्डुं सतोदमास्रावं श्वेतं स्रवति वा कफम्।
- वातश्लेष्मामयव्याप्ता श्वेतपिच्छिलवाहिनी। - वा.

11. परिप्लुता -

- पित्तलाया नृसंवासे क्षवथूद्गार धारणात्।
- शूना स्पर्शाक्षमा नीलपीतमसृक स्रवेत्।
- श्रोणिवंक्षणपृष्ठार्तिज्वरार्तायाः।
- बस्तिकुक्षिगुरुत्त्वांतिसारारोचककारिणी - वा.

Shakti's Classes for Ayurveda

12. उदावर्तिनी -

- रजःकृच्छ्रेणोदावृतं विमुञ्चते।
- आर्तवे सा विमुक्ते तु तत्क्षणं लभतेसुखम्।
- रजसौ गमनादूर्ध्व....।
- उदावृत्ता - वा.

13. कर्णिनी -

- अकालेवाहमानाया गर्भेण पिहितोऽनिलः।
- कर्णिकां जनयेत् योनौ, श्लेष्मरक्तेनमूर्छितः।
- रक्तमार्गावरोधिन्या......।
- रजोमार्गनिरोधिनीम् - वा.

14. पुत्रघ्नी -

- रौक्ष्याद्वायुर्यदा गर्भ जातं जातं विनाशयेत्।
- दुष्टशोणितजं नार्याः पुत्रघ्नी नाम सा मता।
- जातं जातं सुतं हन्ति रौक्ष्याद्दुष्टार्तवोद्भव - वा.

15. अंतर्मुखी -

- व्यवायमतितृप्ताया भजन्ति (पूर्ण भोजन के बाद व्यवाय में प्रवृत्ति)
- वायुर्मिथ्यास्थिताङ्गाया (विषम अंग से शयन)
- वक्रयत्याननं योन्याः (योनि का मुख वक्र कर देना)
- अस्थिमांसानिलार्तिभिः (अस्थि व मांस में वातज वेदना)
- भृशार्तिमैथूनाशक्ता (मैथूनासहिष्णुता)
- अत्याशिताया विषमं स्थितायाः - वा.

16. सूचीमुखी -

- रौक्ष्याद्वायुर्योनिं प्रदूषयन्
- मातृदोषात् अणुद्वारा
- वातलाहार सेविन्यां जनन्या कुपितोऽनिलः।

Shakti's Classes for Ayurveda

17. शुष्का -

- व्यवायकाले रुन्धन्त्या वेगान् प्रकुपितोऽनिल।
- कुर्यात विण्मूत्रसंगर्ति शोषं योनिमुखस्य च।

18. वामिनी -

- षडहात् सप्तरात्राद्वा शुक्रं गर्भाशयगतम्।
- सरुजं निरुजं वा स्रवेत.........॥

19. षण्डी-

- बीजदोषात्तु गर्भस्थमारूतोपहताशया।
- नृद्वेषिणी अस्तनी अनुपक्रमा।

20. महायोनि -

- विषमं दुखशय्यायां मैथूनात् कुपितोऽनिलः।
- गर्भाशयश्च योन्याश्च मुखं विष्टम्भयेत् स्त्रियाः।
- असंवृतमुखी मांसोत्सन्ना रुक्षफेनास्रवाहिनी
- पर्ववंक्षणशूलनी
- उत्सन्नमांसा महारुजम् - वा.

योनिव्यापद के उपद्रव -

गर्भ न गृह्णाती, गुल्म अर्श प्रदरादि।

चिकित्सा -

- 'न हि वातादृते योनिर्नारीणां संप्रदूष्यति।'   च. चि. 30

- अतः प्रथम तथा प्रधान रूप से वात की चिकित्सा अभीष्ट है।

वातज - स्नेहन स्वेदन बस्ति आदि क्रिया → हिंसा कल्क, गुडूच्यादि तैल

पित्तज - रक्तपित्तनाशक शीतल क्रिया → पञ्चवल्कल कल्क

कफज - रुक्ष व उष्ण क्रिया → श्यामादि कल्क

सन्निपातज - विमिश्रं तु संसृष्टासु च कारयेत

Shakti's Classes for Ayurveda